विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति तथा अभिभावकीय आकांक्षा की भूमिका

अशोक कुमार *
सुमित गंगवार **
शिरीष पाल सिंह ***

© NCERT not to be republished

इस शोध पत्र में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा की भूमिका का अध्ययन दिया गया है। इस अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया था। शोधार्थी ने सोद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन प्रविधि द्वारा प्रतिदर्श के रूप में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा ज़िले के राष्ट्रीय सामाजिक विद्यालय के कक्षा 9 (अध्ययन सत्र 2019–20) के 30 विद्यार्थियों का चयन किया था। प्रदत्तों के संकलन हेतु शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति मापनी, यादव (2016) द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत अभिभावकीय आकांक्षा मापनी तथा विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के मापन के लिए कक्षा 8 के वार्षिक परीक्षा के परीक्षाफल का उपयोग किया गया था। प्रदत्तों के मात्रात्मक विश्लेषण के लिए प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात् शोध निष्कर्ष में यह पाया गया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का बहुत ही कम (8.9 प्रतिशत) योगदान है, जबकि अभिभावकीय आकांक्षा का कोई सार्थक योगदान नहीं है।

शिक्षा वह प्रकाश है, जो मानव रूपी शरीर को प्रकाशमय बनाती है। शिक्षा के बिना मनुष्य पशु के समान होता है। शिक्षा पाकर मनुष्य सभ्य बन जाता है। शिक्षा मनुष्य को जीवन भर सहायता प्रदान करती है। शिक्षा हमारी मूलभूत आवश्यकता है, यह हमारे जीवन में बहुत ही अहम भूमिका निभाती है। इसलिए शिक्षा सिर्फ़ अभी के लिए ही नहीं, भविष्य के लिए भी ज़रूरी है। पढ़े-लिखे नागरिक ही किसी भी देश की सबसे बड़ी पूंजी होते हैं, क्योंकि वह अपनी शिक्षा और सूझबूझ के बल पर देश को प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं (लाल तथा शर्मा, 2013)।

* *शोध छात्र,* (एम.एड.) शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा 442005 (महाराष्ट्र)
** *रिसर्च एसोसिएट,* शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा 442005 (महाराष्ट्र)
*** *एसोसिएट प्रोफ़ेसर,* शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा 442005 (महाराष्ट्र)

जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए शिक्षा सभी के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण साधन है। यह हमें जीवन के कठिन समय में चुनौतियों से सामना करने में सहायता प्रदान करती है। ग्रामीण क्षेत्र में शिक्षा के महत्व को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा बहुत-से जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं। यह समाज में सभी व्यक्तियों में समानता की भावना लाती है और देश के विकास और वृद्धि को भी बढ़ावा देती है। आज के समाज में शिक्षा का महत्व काफी बढ़ चुका है। शिक्षा इस प्रकार की होनी चाहिए कि व्यक्ति अपने परिवेश से परिचित हो सकें। शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए एक बहुत ही आवश्यक साधन है। शिक्षा मानव विकास का साधन है। इसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान और कौशल के आधार पर होता है। शिक्षा मनुष्य को सभ्य, सुसंस्कृत और योग्य नागरिक बनाती है। मनुष्य को एक बेहतर नागरिक बनाती है और राष्ट्र का निर्माण करती है। शिक्षा वह साधन है, जिससे मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है (मिश्रा, 2012, पटेल, 2019)।

सामाजिक विज्ञान एक ऐसा विषय है जो सामाजिक और भौतिक वातावरण का अध्ययन तो कराता ही है, साथ ही मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं, क्रियाओं और रहन-सहन के ढंग का अध्ययन भी कराता है (आन्द्रे, 2011)। यह मनुष्य का मनुष्य से, मनुष्य का अन्य जीवों से, मनुष्य का अन्य समुदायों से, अन्य संस्थाओं से तथा अन्य राज्यों से संबंध का अध्ययन भी कराता है। इस प्रकार सामाजिक अध्ययन मूलतः समाज और समाज में रहने वाले मनुष्यों के संबंधों का अध्ययन है। यह एक ओर मनुष्य का अध्ययन है तो दूसरी ओर उसका अन्य व्यक्तियों, व्यवसायों और संस्थाओं से संबंध का अध्ययन कराता है। समाज के अध्ययन के रूप में यह व्यक्ति, परिवार, परंपराएँ, जातीय संबंध, वैवाहिक संबंध, शासन प्रणाली और विविध सामाजिक संस्थाओं के विकास का अध्ययन कराता है और इनका अपने वातावरण से संबंध स्पष्ट कराता है। अतः यह मनुष्य का सभी दृष्टिकोणों से (ऐतिहासिक, भौगोलिक, नागरिक, आर्थिक और सामाजिक) अंतर्संबंधों का अध्ययन है (ओगुन्जी, एगबा तथा ओगुन्जी, 2017)। सामाजिक विज्ञान एक ऐसा विषय है जो विद्यार्थी को व्यक्तिगत रूप से प्रशिक्षित करता है और साथ ही मनुष्य के संबंधों को समझने और उनके अनुसार कौशल का विकास करने में सहायता करता है। यह विद्यार्थी को एक प्रबुद्ध नागरिक के रूप में तैयार करके समाज का प्रभावशाली सदस्य बनाता है। विद्यार्थी सामाजिक विज्ञान से विषय सामग्री ग्रहण करता है, जो मानव व्यवहार, मानव संबंध और मानव संस्थाओं से संबंधित है (बत्रा, 2011 तथा भटनागर, 2018)।

सामाजिक अध्ययन विषय का शुभारंभ 1820 में यू.एस.ए. में हुआ (कीज्स, 2010 तथा कुमार, 2018)। तत्कालीन विद्वानों ने इतिहास, राजनीतिशास्त्र तथा अर्थशास्त्र तीनों विषयों के समूह को सामाजिक अध्ययन विषय के रूप में स्वीकार किया। आगे चलकर इसमें समाजशास्त्र को भी सम्मिलित किया गया। इस क्षेत्र में 1921 में राष्ट्रीय परिषद् तथा 1934 में सोशल स्टडीज़ के अध्ययन हेतु एक आयोग का गठन किया गया, जिसने इसके विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस प्रकार 1892 से 1934 तक की यात्रा में इस विषय का एकीकृत रूप सामने आया जो विभिन्न सामाजिक विज्ञानों का

© NCERT not to be republished

समूह मात्र न होकर उनका समन्वित एकीकृत रूप है। भारत में सामाजिक अध्ययन विषय का शुभारंभ 1937 में माना जा सकता है, क्योंकि इसी वर्ष से शिक्षा का बुनियादी ढाँचा प्रारंभ हुआ था, लेकिन एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करने के लिए, विभिन्न आयोगों द्वारा अलग-अलग प्रकार से व्याख्या की गयी है (मिश्र, 2016)।

भारत में सामाजिक अध्ययन से सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ने व पढ़ाने की यात्रा

प्रारंभ में इस विषय को सामाजिक अध्ययन के नाम से पढ़ाया जाता था, लेकिन कालांतर में विभिन्न पाठ्यचर्या रूपरेखाओं ने इस विषय की विषय-वस्तु के पुनर्गठन के साथ ही इस ज्ञानानुशासन को सामाजिक विज्ञान के विषय के नाम के रूप में स्वीकार किया। वर्ष 1975 की पाठ्यचर्या की रूपरेखा में कहा गया कि, "प्रत्येक विषय की आवश्यक इकाइयों की पहचान करके उन्हें एक समग्र पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाना चाहिए लेकिन इसके बाद भी सामाजिक विज्ञान का अध्ययन-अध्यापन अलग-अलग विषयों के रूप में किया जाता रहा। जिसके आधार पर राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने कक्षा 6 से 10 तक के लिए इतिहास, भूगोल तथा नागरिक शास्त्र के शीर्षकों के अंतर्गत तीन पुस्तकें तैयार की (दसवर्षीय स्कूल के लिए पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 1975)। लेकिन परीक्षा के दृष्टिकोण से इन तीनों विषयों को एक ही ज्ञानानुशासन में रखा गया जिसे सामाजिक विज्ञान कहा गया। सन् 1988 में पाठ्यचर्या के पुनरावलोकन में इस बात पर बल दिया गया कि सामाजिक विज्ञान विषय की पाठ्यचर्या के निर्माण की प्रक्रिया में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाए कि इस विषय से संबंधित किसी भी महत्वपूर्ण तथा केंद्रीय घटक को अनदेखा न किया जाए (प्रारम्भिक तथा माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या—एक रूपरेखा, 1988)। साथ ही, माध्यमिक स्तर पर इस ज्ञानानुशासन में चार प्रमुख विषयों यथा, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र को सम्मिलित किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 में, सामाजिक विज्ञान विषय की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने पर विशेष बल दिया गया तथा माध्यमिक स्तर पर इस ज्ञानानुशासन में चार प्रमुख विषयों यथा, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र के अतिरिक्त एक अन्य विषय समाजशास्त्र को भी सम्मिलित किया गया (स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2000)।

सामाजिक विज्ञान के शिक्षण पर चर्चा हेतु गठित राष्ट्रीय फोकस समूह ने सामाजिक विज्ञान विषय में विषय-वस्तु का भार, विविधता और स्थानीय विषय-वस्तु, वैज्ञानिक दृढ़ता, मूल्य संबंधी सरोकार तथा विषयों के बीच अंतर्संबंध जैसे विचारणीय मुद्दों को महत्वपूर्ण मानते हुए इस विषय के लिए एक विशिष्ट ज्ञान-मीमांसीय ढाँचे पर विस्तृत चर्चा की (सामाजिक विज्ञान का शिक्षण, 2007)। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* में, माध्यमिक स्तर पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2000 में, सामाजिक विज्ञान ज्ञानानुशासन के लिए निर्धारित पाँच विषयों यथा, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र, अर्थशास्त्र तथा समाजशास्त्र को ही सम्मिलित किया गया, लेकिन इसमें नागरिक शास्त्र विषय का नाम बदलकर राजनीति विज्ञान करने का सुझाव दिया गया (*राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*)। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* का मानना

© NCERT not to be republished

है कि सामाजिक विज्ञान समाज से जुड़ा विज्ञान है। अतः इस विषय की पाठ्यपुस्तक को बंद-बॉक्स नहीं, अपितु एक गतिशील दस्तावेज होना चाहिए तथा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में निर्माणवादी सिद्धांतों को समावेशित करते हुए शिक्षार्थियों को उनके वास्तविक अनुभवों का सहारा लेते हुए नवीन ज्ञान के निर्माण के अवसर प्रदान करने चाहिए।

इस शोध कार्य में संबंधित साहित्य के अध्ययन के आधार पर शोधार्थी ने पाया कि सामाजिक विज्ञान विषय के क्षेत्र में विशेषतः माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में विभिन्न कारकों की भूमिका के अध्ययन पर कोई शोध कार्य नहीं हुआ। इसलिए इस विषय पर अध्ययन की आवश्यकता महसूस हुई। इस अध्ययन में सामाजिक विज्ञान विषय में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में विभिन्न कारकों या प्रभावों की भूमिका का अध्ययन किया गया है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा की भूमिका।

संक्रियात्मक परिभाषाएँ

1. **सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति**— हमारे मन की वे विशेष वृत्तियाँ जो किसी व्यक्ति, पदार्थ, संस्था, परिस्थिति या विचार के प्रति हमारे आचरण का स्वरूप निर्धारित करती हैं, जिसके कारण हम इन वस्तुओं के प्रति अपनी कोई विशेष धारणा अथवा विचार बना लेते हैं, अभिवृत्ति कहलाती है (भटनागर तथा अन्य, 2015)। इस अध्ययन में सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति बनी विशेष धारणा से है।
2. **सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति का पूर्वानुमान**— पूर्वानुमान का तात्पर्य किसी भी व्यक्ति अथवा कार्य के वर्तमान अध्ययन के आधार पर उसके भविष्य के संबंध में विचार प्रकट करने या कथन करने से है। इस अध्ययन में सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान का तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की इस विषय के प्रति बनने वाली बनी विशेष धारणा से है।
3. **पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि**— इस अध्ययन में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 (अध्ययन सत्र 2019–20) के विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा (कक्षा 8) के वार्षिक परीक्षा के परीक्षाफल से है।
4. **अभिभावकीय आकांक्षा**— अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों के संदर्भ में शैक्षिक, व्यावसायिक एवं व्यावहारिक लक्ष्यों को निर्धारित करते हुए, अपने बच्चों द्वारा उन्हें प्राप्त करने की इच्छा रखना, अभिभावकीय आकांक्षा कहलाती है। इस अध्ययन में अभिभावकीय आकांक्षा का अर्थ अभिभावकीय आकांक्षा प्रश्नावली के तीन आयामों (शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावकीय आकांक्षा तथा पाठ्य सामग्री क्रिया) पर अभिभावकों द्वारा अर्जित परिणाम से है।

© NCERT not to be republished

शोध उद्देश्य

इस शोध अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे—

1. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के योगदान का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा के योगदान का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिभावकीय आकांक्षा एवं पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के संयुक्त एवं व्यक्तिगत योगदान का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाएँ

इस शोध अध्ययन की निम्न शून्य परिकल्पनाएँ थीं—

1. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा का सार्थक योगदान नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिभावकीय आकांक्षा एवं पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक संयुक्त एवं व्यक्तिगत योगदान नहीं है।

शोध का परिसीमन

इस शोध अध्ययन का परिसीमन निम्न प्रकार था—

1. यह शोध अध्ययन राज्य के वर्धा जिले के महाराष्ट्र राज्य के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षण मंडल, पुणे द्वारा संचालित सरकारी माध्यमिक विद्यालयों पर आधारित है।
2. यह शोध अध्ययन वर्धा ज़िले के राष्ट्रीय सामाजिक विद्यालय के कक्षा 9 (अध्ययन सत्र 2019–20) में पढ़ने वाले 30 विद्यार्थियों तक सीमित है।

शोध विधि

इस अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शोध कार्य की प्रकृति के अनुरूप वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि (न्यादर्श सर्वेक्षण शोध विधि) का उपयोग किया गया था।

जनसंख्या, प्रतिदर्श तथा प्रतिदर्शन प्रविधि

इस शोध में शोधार्थी द्वारा जनसंख्या के रूप में महाराष्ट्र राज्य के वर्धा ज़िले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के विद्यार्थियों को लिया गया तथा प्रतिदर्श के रूप में वर्धा ज़िले के राष्ट्रीय सामाजिक विद्यालय के कक्षा 9 (अध्ययन सत्र 2019–20) में पढ़ने वाले 30 विद्यार्थियों का चयन सोद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्शन प्रविधि द्वारा किया गया।

शोध उपकरण

इस शोध अध्ययन में विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित 'सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति मापनी', अभिभावक की आकांक्षा से संबंधित प्रदत्तों को एकत्रित करने के लिए पूर्व-निर्मित एवं मानकीकृत 'अभिभावकीय आकांक्षा प्रश्नावली' (यादव, 2016) तथा विद्यार्थियों की पूर्व

© NCERT not to be republished

कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि को ज्ञात करने के लिए इन विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा (कक्षा 8, अध्ययन सत्र 2018–19) के वार्षिक परीक्षा के परीक्षाफल को लिया गया। इन तीनों शोध उपकरणों का संक्षिप्त व विवरण निम्नवत है—

1. **सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति मापनी**— इस शोध में सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति जानने के लिए शोधार्थी द्वारा स्वनिर्मित पाँच बिंदु लिकर्ट मापनी 'सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति मापनी' का उपयोग किया गया। इस मापनी में पाँच आयामों (सामाजिक शिक्षा, पठन-पाठन एवं शिक्षण कार्य, व्यावहारिक शिक्षा, संस्कृति एवं पर्यावरण शिक्षा तथा राजनीतिक शिक्षा) से संबंधित कुल 22 कथनों (22 धनात्मक तथा 4 ऋणात्मक कथन) को सम्मिलित किया गया है। विद्यार्थियों की सकारात्मक कथनों पर पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत प्रतिक्रिया पर क्रमशः 5, 4, 3, 2 एवं 1 अंक और नकारात्मक कथनों पर क्रमशः 1, 2, 3, 4 एवं 5 अंक प्रदान किए गए। इस प्रकार विद्यार्थियों द्वारा इस मापनी में प्राप्तांकों का न्यूनतम तथा अधिकतम प्रसार 22–110 के मध्य था।

2. **पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि**— इस शोध में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के रूप में न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा (कक्षा 8) के वार्षिक परीक्षा के परीक्षाफल को लिया गया।

3. **अभिभावकीय आकांक्षा प्रश्नावली**— इस शोध में सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिभावकीय आकांक्षा को जानने के लिए शोधार्थी द्वारा यादव (2016) द्वारा निर्मित तथा मानकीकृत निश्चित एकांश प्रश्नावली (हाँ/नहीं) 'अभिभावकीय आकांक्षा प्रश्नावली' का उपयोग किया गया। इस प्रश्नावली में तीन आयामों (शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावकीय आकांक्षा तथा पाठ्य सामग्री क्रिया) से संबंधित कुल 33 एकांशों को सम्मिलित किया गया है। प्रत्येक एकांश पर अभिभावकों के सही उत्तर के लिए एक अंक तथा गलत उत्तर के लिए शून्य अंक दिया गया। इस प्रकार अभिभावकों द्वारा इस प्रश्नावली में प्राप्तांकों का न्यूनतम तथा अधिकतम प्रसार 0–33 के मध्य था।

आँकड़ों का विश्लेषण तथा विवेचन

इस शोध में विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा की भूमिका के अध्ययन से संबंधित आँकड़ों को शोध उद्देश्यों के अनुरूप विश्लेषित करने के लिए शोधार्थी द्वारा सरल रेखीय एवं बहुरेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधियों का उपयोग किया गया। जिसके फलस्वरूप प्राप्त परिणामों की व्याख्या उद्देश्यवार निम्नलिखित शीर्षकों के अंतर्गत प्रस्तुत की गई है—

1. *विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के योगदान का अध्ययन*

माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के योगदान का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य से संबंधित शून्य परिकल्पना की

© NCERT not to be republished

जाँच करने हेतु शोधार्थी द्वारा रेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया। शोधार्थी द्वारा इस सांख्यिकी प्रविधि के उपयोग से पूर्व इससे संबंधित सभी अवधारणाओं का परीक्षण किया गया (कुमार, 2018), जिनका विवरण निम्नलिखित तालिकाओं में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 1—अवशिष्ट सांख्यिकी (Residuals Statistics)[a]

	महालनोबिस डिस्टेंस (Mahalanobis Distance)	कुक्स डिस्टेंस (Cook's Distance)
न्यूनतम (Minimum)	.006	.000
अधिकतम (Maximum)	3.212	.282
माध्य (Mean)	.967	.040
मानक विचलन (SD)	.863	.071
संख्या (N)	30	30

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

तालिका 1 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि महालनोबिस डिस्टेंस का न्यूनतम एवं अधिकतम मान क्रमशः 0.006 तथा 3.212 है, जोकि df = 1, x2 (काई वर्ग) के 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 3.84 से कम है। अतः सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि आँकड़ों में संभावित आउटलियर नहीं हैं। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जा सकती, जिसके फलस्वरूप यह कहा जा सकता है कि आँकड़ों में आउटलियर अनुपस्थित हैं। कुक्स डिस्टेंस का न्यूनतम एवं अधिकतम मान क्रमशः 0.000 एवं 0.282 है। ये मान एक से कम हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि आँकड़ों में आउटलियर नहीं हैं। उपरोक्त परिणाम के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि रेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि की अवधारणा संतुष्ट होती है। उपरोक्त अवधारणा की संतुष्टी हो जाने के पश्चात् शोधार्थी द्वारा रेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किया, जिसका विवरण तालिका 2, 3 व 4 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 2—प्रतिगमन प्रतिमान सारांश (Model Summary)

प्रतिमान (Model)	1
आर (R)	.298[a]
आर वर्ग (R Square)	.089
समायोजन आर वर्ग (Adjusted R Square)	.056
आकलन की प्रमाणिक त्रुटि (Std. Error of the Estimate)	10.057

a. पूर्वकथन (Predictors)— स्थिरांक (Constant), पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि

© NCERT not to be republished

तालिका 3— प्रसरण विश्लेषण (ANOVA)[a] प्रतिमान (Model) वर्गों का योग

प्रतिमान (Model)		वर्गों का योग (Sum of Squares)	स्वतंत्र्यांश (df)	माध्य वर्ग (Mean Square)	एफ (F)	सार्थकता (Sig.)
1.	प्रतिगमन (Regression)	275.362	1	275.362	2.722	.110[b]
	अवशिष्ट) (Residual)	2832.138	28	101.148		
	योग (Total)	3107.500	29			

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

b. पूर्व कथन (Predictors)— स्थिरांक (Constant), पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि

तालिका 4— सहगुणांक (Coefficients)[a]

प्रतिमान (Model)		अमानकीकरण गुणांक (Unstandardized Coefficients)		मानकीकरण गुणांक (Standardized Coefficients)	टी (t)	सार्थकता (Sig.)
		बी (B)	*प्रमाणिक त्रुटि (Std. Error)*	*बीटा (Beta)*		
1.	स्थिरांक (Constant)	48.460	18.902		2.564	.016
	पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि	.445	.270	.298	1.650	.110

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

© NCERT not to be republished

तालिका 2 से स्पष्ट होता है कि R^2 का मान 0.089 है, जो यह दर्शाता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का 8.9 प्रतिशत योगदान है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान करने में बहुत कम योगदान है।

तालिका 3 में F का मान df (1, 28) पर 2.722 है, जिसका p मान 0.110 है, जो कि 0.01 सार्थक स्तर से अधिक है। अतः यह सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी से भी यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि सार्थक योगदान नहीं करती है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा की

शैक्षिक उपलब्धि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करती है।

तालिका 4 में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में सहगुणांक का मान 0.445 है। जिसका संगत t– मान 1.650 तथा p मान 0.110 है, जो कि 0.01 सार्थक स्तर से अधिक है। यह मान सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है' निरस्त नहीं की जा सकती। इससे यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है और यह विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करती है।

2. ***विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा के योगदान का अध्ययन***

   इस शोध का द्वितीय उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा के योगदान का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य से संबंधित शून्य परिकल्पना की जाँच करने हेतु शोधार्थी द्वारा रेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया है। शोधार्थी द्वारा इस सांख्यिकी प्रविधि के उपयोग से पूर्व इससे संबंधित सभी अवधारणाओं का परीक्षण किया गया, जिनका विवरण तालिका 5 में प्रस्तुत किया गया है।

अवधारणाओं का परीक्षण

तालिका 5 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि महालनोबिस डिस्टेंस का न्यूनतम एवं अधिकतम मान क्रमशः 0.009 तथा 3.499 है, जो कि df = 1, x2 (काई वर्ग) के 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 3.84 से कम है। अतः सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आँकड़ों में संभावित आउटलियर नहीं हैं। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जा सकती। जिसके फलस्वरूप यह कहा जा सकता है कि आँकड़ों में आउटलियर अनुपस्थित हैं। कुक्स डिस्टेंस का न्यूनतम एवं अधिकतम मान क्रमशः 0.000 एवं 0.563 है। यह मान एक से कम हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि आँकड़ों

तालिका 5— अवशिष्ट सांख्यिकी (Residuals Statistics)[a]

प्रतिमान (Model)	महालनोबिस डिस्टेंस (Mahalanobis Distance)	कुक्स डिस्टेंस (Cook's Distance)
न्यूनतम (Minimum)	.009	.000
अधिकतम (Maximum)	3.499	.563
माध्य (Mean)	.967	.046
मानक विचलन (SD)	.963	.102
संख्या (N)	30	30

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

© NCERT not to be republished

में आउटलियर नहीं हैं। उपरोक्त परिणाम के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि रेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि की अवधारणा संतुष्ट होती है। उपरोक्त अवधारणा के संतुष्ट हो जाने के पश्चात् शोधार्थी द्वारा रेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किया, जिसका विवरण तालिका 6, 7 व 8 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 6 से स्पष्ट होता है कि R^2 का मान 0.000 है, जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा का 0 प्रतिशत योगदान है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में अभिभावकीय आकांक्षा का सार्थक योगदान नहीं है।

तालिका 6—प्रतिगमन प्रतिमान सारांश (Model Summary)

प्रतिमान (Model)	आर (R)	आर वर्ग (R Square)	समायोजन आर वर्ग (Adjusted R Square)	आकलन की प्रमाणिक त्रुटि (Std. Error of the Estimate)
1.	.005[a]	.000	–.036	10.535

a. पूर्व कथन (Predictors)— स्थिरांक (Constant), अभिभावकीय आकांक्षा

तालिका 7— प्रसरण विश्लेषण (ANOVA)[a] प्रतिमान (Model) वर्गों का योग

प्रतिमान (Model)		वर्गों का योग	प्रमाणिक त्रुटि (Std. Error)	बीटा (Beta)	एफ (F)	सार्थकता
1.	प्रतिगमन (Regression)	.070	1	.070	.001	.980[b]
	अवशिष्ट (Residual)	3107.430	28	110.980		
	योग (Total)	3107.500	29			

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति
b. पूर्व कथन (Predictors)— स्थिरांक (Constant), अभिभावकीय आकांक्षा

तालिका 8— सहगुणांक (Coefficients)[a]

प्रतिमान (Model)		अमानकीकरण गुणांक (Unstandardized Coefficients)		मानकीकरण गुणांक (Standardized Coefficients)	टी (t)	सार्थकता (Sig.)
		बी (B)	*प्रमाणिक त्रुटि (Std. Error)*	*बीटा (Beta)*		
1.	स्थिरांक (Constant)	78.478	40.855			
	अभिभावकीय आकांक्षा	.017	.695	.005	.025	.980

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

© NCERT not to be republished

तालिका 7 में F का मान df (1, 28) पर 0.001 है, जिसका p मान 0.980 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी से भी यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में अभिभावकीय आकांक्षा का सार्थक योगदान नहीं है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति को अभिभावकीय आकांक्षा प्रभावित नहीं करती है।

तालिका 8 में अभिभावकीय आकांक्षा के संदर्भ में सहगुणांक का मान 0.017 है। जिसका संगत t-मान 0.025 तथा p का मान 0.980 है, जो कि 0.01 से अधिक है। यह मान सार्थकता के 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा का सार्थक योगदान नहीं है' निरस्त नहीं की जा सकती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान अभिभावकीय आकांक्षा का सार्थक योगदान नहीं है। अतः यह कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में अभिभावकीय आकांक्षा का सार्थक योगदान नहीं है और यह विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति को प्रभावित नहीं करती है।

3. *विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा का व्यक्तिगत एवं संयुक्त योगदान का अध्ययन*

इस शोध कार्य का तीसरा उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा का व्यक्तिगत एवं संयुक्त योगदान का अध्ययन करना था। इस उद्देश्य से संबंधित शून्य परिकल्पना की जाँच करने हेतु शोधार्थी द्वारा बहु प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग किया गया है। शोधार्थी द्वारा इस सांख्यिकी प्रविधि के उपयोग से पूर्व इससे संबंधित सभी अवधारणाओं का परीक्षण किया गया, जिनका विवरण तालिका 9 में प्रस्तुत किया गया है।

अवधारणाओं का परीक्षण

तालिका 9 के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि महालनोबिस डिस्टेंस का न्यूनतम एवं अधिकतम मान क्रमशः 0.014 एवं 5.720 है, जो कि df = 2 पर x2 (काई वर्ग) के 0.05 सार्थकता स्तर पर तालिका मान 5.99 से कम है। अतः सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। इससे यह स्पष्ट होता है कि आँकड़ों में संभावित आउटलियर नहीं हैं। इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जा सकती है। इसके फलस्वरूप यह कहा जा सकता है कि आँकड़ों में आउटलियर अनुपस्थित हैं। इसके अतिरिक्त कुक्स

© NCERT not to be republished

तालिका 9— अवशिष्ट सांख्यिकी (Residuals Statistics)[a]

प्रतिमान (Model)	महालनोबिस डिस्टेंस (Mahalanobis Distance)	कुक्स डिस्टेंस (Cook's Distance)
न्यूनतम (Minimum)	.014	.000
अधिकतम (Maximum)	5.720	.443
माध्य (Mean)	1.933	.048
मानक विचलन (SD)	1.434	.096
संख्या (N)	30	30

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

डिस्टेंस का न्यूनतम एवं अधिकतम मान क्रमशः 0.000 एवं 0.443 है। ये मान एक से कम हैं, जिसके परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि आँकड़ों में आउटलियर नहीं हैं। उपरोक्त परिणाम के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि रेखीय प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि की अवधारणा संतुष्ट होती है। उपरोक्त अवधारणा के संतुष्ट हो जाने के पश्चात् शोधार्थी द्वारा बहु प्रतिगमन विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि की सहायता से आँकड़ों का विश्लेषण कर निष्कर्ष प्राप्त किया, जिसका विवरण तालिका 10, 11, 12 एवं 13 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका 10 में विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि में धनात्मक सहसंबंध गुणांक का मान 0.298 है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि एवं सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति में निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध है। तालिका 10 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिभावकीय आकांक्षा के मध्य सहसंबंध गुणांक का मान 0.005

तालिका 10— सहसंबंध (Correlations)

		सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति	पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि	अभिभावकीय आकांक्षा
सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति	पियर्सन सहसंबंध	1	.298	.005
	सार्थकता, द्वि-पुंच्छीय		.110	.980
	संख्या (N)	30	30	30
पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि	पियर्सन सहसंबंध	.298	1	-.007
	सार्थकता, द्वि-पुंच्छीय	.110		.971
	संख्या (N)	30	30	30
अभिभावकीय आकांक्षा	पियर्सन सहसंबंध	.005	-.007	1
	सार्थकता, द्वि-पुंच्छीय	.980	.971	
		30	30	30

© NCERT not to be republished

है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति एवं अभिभावकीय आकांक्षा में निम्न स्तर का धनात्मक सहसंबंध है। अतः यह कहा जा सकता है कि दोनों कारकों यथा पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि और अभिभावकीय आकांक्षा का सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के साथ अलग-अलग स्तर का धनात्मक सहसंबंध है।

तालिका 11—प्रतिगमन प्रतिमान सारांश (Model summary)[b]

प्रतिमान (Model)	आर (R)	आर वर्ग (R Square)	समायोजन आर वर्ग (Adjusted R Square)	आकलन की प्रमाणिक त्रुटि (Std. Error of the Estimate
1.	.298[a]	.089	.021	10.242

a. पूर्व कथन (Predictors)— स्थिरांक (Constant), पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावकीय आकांक्षा

b. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

तालिका 12—प्रसरण विश्लेषण (ANOVA)[a]

प्रतिमान (Model)		वर्गों का योग (Sum of Squares)	स्वतंत्र्यांश (df)	माध्य वर्ग (Mean Square)	एफ (F)	सार्थकता (Sig.)
1.	प्रतिगमन (Regression)	275.507	2	137.753	1.313	.286[b]
	अवशिष्ट (Residual)	2831.993	27	104.889		
	योग (Total)	3107.500	29			

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

b. पूर्व कथन (Predictors)— स्थिरांक (Constant), पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावकीय आकांक्षा

तालिका 13— सहगुणांक (Coefficients)[a]

प्रतिमान (Model)		अमानकीकरण गुणांक (Unstandardised Coefficients)		मानकीकरण गुणांक (Standardised Coefficients)	टी (t)	सार्थकता (Sig.)
		बी (B)	*प्रमाणिक त्रुटि*	*बीटा (Beta)*		
1.	स्थिरांक (Constant)	46.982	44.219		1.062	.297
	पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि	.445	.275	.298	1.620	.117
	अभिभावकीय आकांक्षा	.025	.676	.007	.037	.971

a. आश्रित चर (Dependent Variable)— सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति

© NCERT not to be republished

तालिका 11 से स्पष्ट होता है कि समायोजित R^2 का मान 0.021 है, जो यह दर्शाता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा (दोनों स्वतंत्र चरों) का 2.1 प्रतिशत योगदान है।

तालिका 12 में F का मान df (2, 27) पर 1.313 है, जिसका p मान 0.286 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी से भी यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है। दूसरी तरफ़ विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा का भी सार्थक योगदान नहीं है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा उनकी अभिभावकीय आकांक्षा विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान को व्यक्तिगत तथा संयुक्त रूप से प्रभावित नहीं करती हैं।

तालिका 13 में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में मानकीकृत बीटा का मान 0.298 है, जिसका संगत t-मान 1.620 तथा p मान 0.117 है, जो कि 0.01 से अधिक है। अतः यह सार्थकता के 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है। इसी प्रकार अभिभावकीय आकांक्षा के संदर्भ में मानकीकृत बीटा मान 0.007 है, जिसका संगत t-मान 1.037 तथा p मान 0.971 है, जो कि 0.01 सार्थकता स्तर से अधिक है। अतः सार्थकता के 0.01 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतः इस परिप्रेक्ष्य में शून्य परिकल्पना 'माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिभावकीय आकांक्षा एवं पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक संयुक्त एवं व्यक्तिगत योगदान नहीं है' निरस्त नहीं की जा सकती है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति को उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा का व्यक्तिगत एवं संयुक्त सार्थक योगदान नहीं है।

शोध निष्कर्ष एवं व्याख्या

इस शोध कार्य के उद्देश्यवार प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं—

1. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का मात्र 8.9 प्रतिशत योगदान है। इससे यह स्पष्ट होता है कि पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में बहुत ही कम योगदान करती है। प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी प्रविधि के माध्यम से भी यह ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि का सार्थक योगदान नहीं है। इसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि से प्रभावित नहीं होती है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति विद्यार्थियों का रुझान

© NCERT not to be republished

कम है। इन परिणामों के आलोक में यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षण में ऐसी विधियों का समावेश होना चाहिए जो विद्यार्थियों में रचनात्मकता, सौंदर्यबोध और आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य को प्रोत्साहित करें एवं बच्चों को अतीत और वर्तमान के बीच संबंध स्थापित करने तथा समाज में हो रहे परिवर्तनों को समझने में सक्षम बनाएँ। शिक्षकों को अपनी कक्षा की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समस्या-समाधान, नाटकीय रूपांतर एवं भूमिका निर्वाह जैसी कुछ अन्य रचनात्मक एवं विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण विधाओं को उपयोग में लाने के साथ-साथ सामाजिक विज्ञान के शिक्षण कार्य में चित्रों, चार्टों, मानचित्र, पुरातत्ववादी एवं भौतिक तथा संस्कृतियों, जैसे— श्रव्य-दृश्य सामग्रियों का उपयोग करना चाहिए। विद्यार्थियों को सीखने की प्रक्रिया में परस्पर भागीदारी की प्रक्रिया (स्वयं करके सीखने की प्रक्रिया) होनी चाहिए। विद्यार्थियों को विद्यालय में सामाजिक विज्ञान के विभिन्न समसामयिक मुद्दों पर आयोजित होने वाले वाद-विवाद और परिचर्चा में भाग लेने के लिए जागरूक करना चाहिए और इन गतिविधियों का संचालन प्रत्येक विषय पर सप्ताह में ज़रूर होना चाहिए। जिससे विद्यार्थियों में स्वयं को अभिव्यक्त करने एवं सृजनात्मक सोच विकसित करने में सहायता मिल सके ताकि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति उनकी अभिवृत्ति को सकारात्मक रूप से बढ़ाया जा सके।

2. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी अभिभावकीय आकांक्षा का शून्य प्रतिशत का योगदान है। इससे यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में अभिभावकीय आकांक्षा का योगदान नहीं है। इसका प्रमुख कारण सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिभावकों के दृष्टिकोण में भिन्नता का होना है। प्रसरण विश्लेषण सांख्यिकी के परिणाम से भी यही ज्ञात होता है कि विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में अभिभावकीय आकांक्षा का सार्थक योगदान नहीं है। दूसरी ओर सहगुणांक सांख्यिकी का परिणाम भी इसी निष्कर्ष की पुष्टि करता है। इस परिणाम के आलोक में यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अभिभावकों की अभिभावकीय आकांक्षा इस विषय के प्रति भिन्न-भिन्न है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक विज्ञान विषय अध्ययन के पश्चात् रोज़गार के अवसरों की समस्या बहुत अधिक होती है। जब अभिभावक अपने आस-पास के शिक्षित विद्यार्थियों को देखते हैं कि सामाजिक विज्ञान विषय से संबंधित उपाधि प्राप्त करने पर भी वे बेरोज़गार हैं, जिससे उनके मस्तिष्क में इस विषय के प्रति हेय दृष्टि जाग्रत होती है और वे अपने बच्चों को अन्य विषय पढ़ने के लिए सलाह देते हैं।

3. माध्यमिक स्तर पर कक्षा 9 के विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति के पूर्वानुमान में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा का मात्र 2.1 प्रतिशत व्यक्तिगत एवं संयुक्त योगदान है। इससे यह स्पष्ट होता है कि

विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के पूर्वकथन में उनकी पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि तथा अभिभावकीय आकांक्षा का व्यक्तिगत एवं संयुक्त योगदान बहुत कम है। साथ ही अभिभावक की आकांक्षा भी सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति भिन्न-भिन्न है एवं पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि भी इस विषय को प्रभावित नहीं करती है। प्रसरण विश्लेषण तथा सहगुणांक सांख्यिकी के माध्यम से प्राप्त परिणाम भी उक्त निष्कर्ष की पुष्टि करते हैं। इस परिणाम के संदर्भ में यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि अभिभावकों में अपने बच्चों के लिए सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिभावकीय आकांक्षा अलग-अलग है। जिन अभिभावकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति संतोषजनक है, वे अपने बच्चों को विज्ञान विषय पढ़ने के लिए सलाह देते हैं। जबकि दूसरी ओर जिन अभिभावकों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं है, वे अपने बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ परिवार के लिए जीवकोपार्जन हेतु सहायता लेते हैं, जिसके कारण इन विद्यार्थियों का अध्ययन प्रभावित होता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति विद्यार्थियों का रुझान कम है। इसके लिए विद्यार्थियों को सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति जागरूक करते हुए उन्हें विश्वास दिलाना होगा। सरकार व नीति-निर्माताओं को इस विषय को रोज़गार उन्मुख बनाने की दिशा में कार्य करना होगा। विद्यालय को चाहिए की वह समय-समय पर विद्यार्थियों के लिए सामाजिक विज्ञान विषय से संबंधित रोज़गारों पर निर्देश एवं परामर्श कार्यक्रम आयोजित करें तथा इस विषय में आजीविका का चयन करने हेतु भविष्य की सार्थक पढ़ाई हेतु प्रेरित करें, जिससे विद्यार्थियों की इस विषय के प्रति रुचि बढ़ सके।

शैक्षिक निहितार्थ

इस शोध कार्य के शैक्षिक निहितार्थ निम्नलिखित हो सकते हैं—

1. **विद्यार्थी के लिए**— यह शोध कार्य सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति पर आधारित था। इस शोध-अध्ययन से यह ज्ञात हुआ कि सामाजिक विज्ञान विषय को पढ़ने में विद्यार्थी कम रुचि रखते हैं। इस शोध के परिणाम विद्यार्थियों के संदर्भ में विद्यालय, शैक्षिक संस्थानों एवं शिक्षकों तथा सरकार के लिए इस बात की पुष्टि करेंगे कि सामाजिक विज्ञान विषय को रोज़गार उन्मुख बनाया जाए और विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों को इस विषय एवं इसके भविष्य के बारे में जागरूक करने का काम किया जाए, ताकि विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो सके और विद्यार्थी अपने रोज़गार में लगकर समाज व राष्ट्र का निर्माण करने में अपना योगदान दे सकें।
2. **अभिभावकों के लिए**— इस शोध कार्य में विद्यार्थियों की सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति अभिवृत्ति में अभिभावकीय आकांक्षा को जानने का प्रयास किया गया था। इस शोध कार्य के परिणाम अभिभावकों को उनके बच्चों को सामाजिक विज्ञान विषय के चयन एवं अध्ययन में अभिभावकीय आकांक्षा के महत्व से अवगत कराएँगे, जिससे उनके बच्चों की अभिवृत्ति सामाजिक विज्ञान के पक्ष में हो सके और वे

© NCERT not to be republished

स्वत: अभिप्रेरित होते हुए इस विषय का चयन एवं अध्ययन कर सकें। उनका इस विषय से संबंधित क्रियाकलापों को करने में मन लगे और कर्तव्यनिष्ठ होकर कार्य का संपादन करें तथा अपनी रुचि के अनुरूप सामाजिक विज्ञान विषय में अपने भविष्य के लिए योजना बना सकें।

3. **शिक्षकों के लिए**— शिक्षक समाज व विद्यार्थी के भाग्य-निर्माता होते हैं। इस शोध कार्य के परिणाम विद्यालयी स्तर पर सामाजिक विज्ञान विषय से जुड़े सभी शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगे। इस शोध कार्य के परिणामों के आलोक में शिक्षक अपने विद्यार्थियों की इस विषय के प्रति समझ विकसित करने में अपना योगदान दे सकेंगे। साथ ही, अपने विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास करने के लिए विद्यालय में विभिन्न प्रकार की गतिविधियों का आयोजन भी कर सकेंगे। ताकि विद्यार्थियों का सामाजिक विज्ञान विषय के प्रति लगाव उत्पन्न हो सके, जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक विद्यार्थी एक चरित्रवान एवं सभ्य नागरिक बन सके।

4. **नीति निर्माताओं के लिए**— भारत की स्वतंत्रता के बाद से अब तक विभिन्न आयोगों, नीतियों, समितियों के अतिरिक्त *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005* ने भी सामाजिक विज्ञान विषय के पाठ्यक्रम को विद्यार्थी केंद्रित रखते हुए इस विषय को वास्तविक जीवन से जोड़कर पढ़ाने की बात कही है। लेकिन वर्तमान समय में भी सामाजिक विज्ञान विषय का पाठ्यक्रम मात्र तारीखों, तथ्यों तथा प्रसिद्ध लोगों, स्थानों और संस्थानों के नाम तक ही सीमित है। इस शोध कार्य के परिणाम नीति-निर्माताओं के लिए भी सहायक होंगे, जिसकी सहायता से वे इस तरह की नीतियों का निर्माण कर सकेंगे, जिसमें सामाजिक विज्ञान विषय पढ़ाने के उद्देश्यों में 'बेहतर नागरिक बनाने', 'मस्तिष्क को सोचने के लिए प्रशिक्षण देने' और 'स्वयं को खुलकर अभिव्यक्त करने की योग्यताएँ विकसित करने' इत्यादि को प्रमुखता दी जाए। साथ ही, सामाजिक विज्ञान विषय से संबंधित ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ने, रटन्त प्रणाली से मुक्त होने, बालक के सर्वांगीण विकास के अवसर उपलब्ध कराने और खुली पुस्तक परीक्षा-प्रणाली को अपनाने पर ज़ोर दिया जाए। इस प्रकार विद्यार्थियों में रटने की क्षमता के बजाय सोचने, समझने और जानकारी का बुद्धिमतापूर्वक उपयोग कर पाने की क्षमता पर सबसे अधिक महत्व दिया जाए।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

आन्द्रे, बी. 2011. स्पेशल इशू ऑन सोशल साइंस इन स्कूल्स. *लर्निंग कर्व*. 15, पृष्ठ संख्या 7–9. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, बेंगलुरु.

ओगुन्जी, सी. वी., एगबा, डी. आई. और ओगुन्जी, जे. ओ. 2017. इफेक्ट ऑफ़ यूज़िंग कॉन्सेप्ट मैपिंग इन टीचिंग ऑन द अचीवमेंट ऑफ़ सोशल स्टडीज़ स्टूडेंट्स. *एशियन जर्नल ऑफ़ रिसर्च इन सोशल साइंसेज एंड ह्यूमेनिटीज़*. 7(10).

कीज्स, जी. 2010. टीचिंग द साइंटिफ़िक मैथड इन दी सोशल साइंसेज़. द *जर्नल ऑफ़ इफ़ेक्टिव टीचिंग*. 10(2). यू.एस.ए.

कुमार, एम. 2018. *विभिन्न विद्यालयी स्तरों पर विद्यार्थियों के नागरिकता बोध का चिंतनशील निर्णय क्षमता के फलन के रूप में एक अध्ययन*. (अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोध प्रबंध). महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

पटेल, आर. 2019. *माध्यमिक स्तर पर संस्कृत विषय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर निर्माणवादी उपागम की प्रभावशीलता.* (अप्रकाशित एम.फिल. शोध प्रबंध). महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

बत्रा, पी. 2011. स्पेशल इशू ऑन सोशल साइंस इन स्कूल्स. *लर्निंग कर्व*. 15. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन, बेंगलुरु.

भटनागर, आर. 2018. चेलेंजिस इन टीचिंग एंड लर्निंग ऑफ़ सोशल साइंस— द ड्यूल प्रोस्पेक्टिव. *प्यूपल — इंटरनेशल जर्नल ऑफ़ सोशल साइंसेज़*. 4(3), यू.के.

भटनागर, ए. बी., भटनागर, ए. और भटनागर, एम. 2015. *शैक्षिक मनोविज्ञान*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ

मिश्र, आर. के. 2016. *बच्चों में सामाजिक विज्ञान की समझ उनके दैनंदिन ज्ञान और विद्यालयी ज्ञान के पारस्परिक संबंध का अध्ययन*. (अप्रकाशित डॉक्टोरल शोध प्रबंध), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली.

मिश्रा, एस. के. 2012. *भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

यादव, डी. 2016. *अभिभावकीय आकांक्षा एवं पूर्व कक्षा की शैक्षिक उपलब्धि के संबंध का अध्ययन*. (अप्रकाशित एम.फिल. शोध प्रबंध). महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

लाल, आर. बी. और के. के. शर्मा. 2013. *भारत में शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.

© NCERT not to be republished